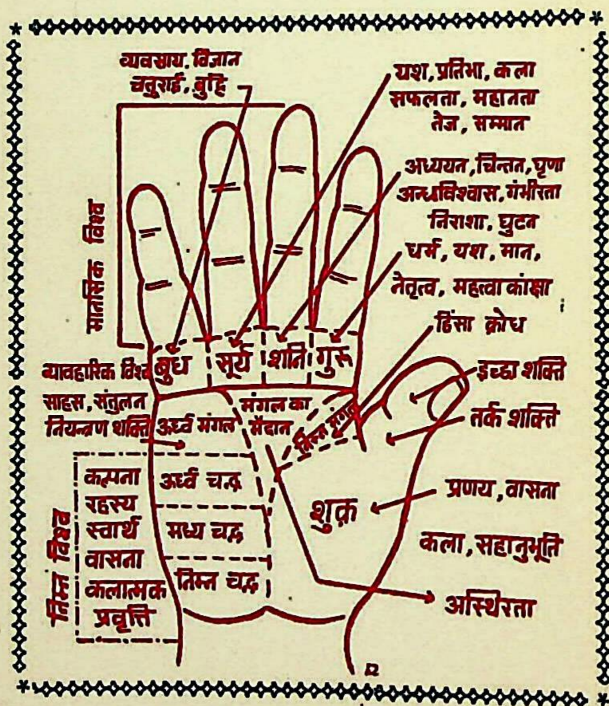
हस्तरेखाऐं

रोग और चिकित्सा



—डॉ० राजेश दीक्षित

केवल पंजीयत चिकित्सकों के उपयोगार्थ]

हस्तरेखाऐं, रोग और चिकित्सा

•

[हस्तरेखाऐं देखकर रोग का ज्ञान और उसकी
होमियोपैथिक चिकित्सा का सरल चित्रण]

•

लेखक—विद्या-वारिधि,
डॉ० राजेश दीक्षित

•

रोजगार प्रकाशन®
हालन गंज, मथुरा—(उ० प्र०)

रोजगार प्रकाशन,
1078, हालनगंज
मथुरा—281001

मूल्य : तीन रुपये मात्र

Rs. 3/-

मुद्रक : मयूर प्रेस, मथुरा.

विषय-सूची

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
• हृदय-रोग— हृदयकम्प रोग, फुफ्फुस रोग	5
• प्लूरिसी रोग	10
• यक्ष्मा (टी. बी.)	11
• खाँसी	12
• दमा (अस्थमा)	13
• उदर-रोग— तिल्ली, जलोदर, गुर्दे व आँतों की व्याधियाँ, अम्लपित्त	14
• मस्तिष्क सम्वन्धी रोग— मृगी, उन्माद	21
• पित्तजन्य विविध विकार	25
• पाण्डुरोग (पीलिया)	26
• वात-रोग	27
• लकवा (पक्षाघात)	29
• हिस्टीरिया	30
• ज्वर-पीड़ा	31
• रक्ताल्पता (शरीर में खून की कमी)	32
• रक्त-विकार	33
• रीढ़ की हड्डी सम्वन्धी व्याधियाँ	34
• मस्तिष्क-ज्वर	35
• लाल-ज्वर	36
• दन्त-रोग	37
• नेत्र सम्वन्धी विविध कष्ट	38
• वहरापन	42
• पावों के रोग	42
• त्वचा-रोग	42
• आत्म-हत्या की प्रवृत्ति	44

हस्तरेखा-योग और होम्यो-उपचार

हाथ पर पाई जाने वाली अनेक रेखाऐं रोग-सूचक भी होती हैं। यहाँ पर विभिन्न रोग-सूचक रेखाओं के लक्षण तथा उन रोगों के सरल उपचारों का उल्लेख किया जा रहा है। स्मरणीय है कि ये उपचार-विधियाँ निरापद, हानिरहित और लाभकर है, तथापि आवश्यकता अनुभव होने पर औषध-सेवन से पूर्व किसी सुयोग्य होम्यो-चिकित्सक से परामर्श किया जा सकता है। औषधियों की शक्ति का चयन रोग की स्थिति के अनुसार करना उचित है।

हृदय-रोग

(1) यदि हृदय-रेखा पर काला-दाग-चिह्न हो तो जातक को हृदय सम्बन्धी बीमारियाँ तथा आकस्मिक-मूर्च्छा रोग होता है।

(2) यदि हृदय-रेखा पर बड़े द्वीप-चिह्न हो तो जातक हृदय-रोगों का शिकार बनता है।

(3) यदि हृदय-रेखा पर पीले रंग का दाग-चिह्न हो और वह मध्यमा अँगुली से मंगल के प्रथम-क्षेत्र तक पंखदार आकृति की एवं झुकी हुई हो तो जातक स्थायी-रूप से हृदय-रोगी होता है।

होम्यो-चिकित्सा—विभिन्न प्रकार के हृदय-रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है।

एबिस नाइग्रा—हृत्पिण्ड में तीक्ष्ण दर्द, हृत्पिण्ड का जोर से धड़कना,

जिसकी आवाज पीठ की ओर से भी सुनाई दे तथा गले का किसी के द्वारा जकड़ दिये जाने जैसा अनुभव होने पर।

कॉल्चिकम—वात का दर्द हृत्पिण्ड में फैल जाने पर।

एबिसन्थियम—हृत्पिण्ड का तेजी से धड़कना, असम गति।

युफोर्बियम—हृत्पिण्ड की क्षीणता, हृत्पिण्ड के भीतर जैसे एक चिड़िया फड़फड़ा रही हो, असम स्थूल नाड़ी की गति एक मिनट में 120-125 बार तक।

मैग-कार्ब—छाती में दर्द, श्वास-कष्ट, रक्त-मिश्रित बलगम तथा खाँसी।

आर्सेनिक—हृत्पिण्ड का काँपना, सामान्य-उत्तेजना से ही छाती का धड़कना।

आर्स-आयोड—हृत्पिण्ड की वृद्धि, छाती का धड़कना, दमा जैसा खिंचाव।

ब्रोनियम—हृत्पिण्ड की वृद्धि, थोड़ा चलने अथवा उठकर बैठते ही छाती का धड़कना, नाड़ी धीर गतिशील, मोटी तथा कठिन।

कैक्टस तथा लिलियम—छाती भारी, छाती पर जैसे कुछ चढ़ा दिया दिया है, करवट से सोने में असमर्थता, छाती का धड़कना।

कैल्केरिया-आर्स—दर्द, छाती का धड़कना, नाड़ी की गति तेज।

साइक्युटा—छाती धड़कने के साथ ही छाती का काँपना।

डिजिटेलिस—हृत्पिण्ड के वैल्व के अनेक प्रकार के कठिन रोग, हृत्पिण्ड का बढ़ना, श्वासकृच्छता, हार्ट-फेल्योर आदि।

फेरम-मेट—नाड़ी खूब मोटी परन्तु कोमल, रक्त-हीनता के कारण छाती धड़कना, हिलने-डुलने पर वृद्धि।

ग्लोनयिन—अत्यधिक छाती धड़कना, जिसका अनुभव अँगुलियों की नोंक तक हो, प्रत्येक धड़कन का कानों से सुनाई देना।

ग्रिण्डेलिया—सोते-सोते अचानक श्वास बन्द हो जाने जैसी स्थिति, साँस फेंकने के लिए घबराहट।

पिपोनिया—बाँई छाती में कोंचने जैसा दर्द, छाती का दर्द जो हृत्पिण्ड में होकर पीठ में जाता हो।

लाइकोपस – हार्ट का बढ़ना, वल्व के रोग, हृत्स्पन्दन।

फाइजस्टिग्मा—भयानक रूप से छाती का धड़कना, जिसकी अनुभूति गले, सिर तथा ललाट तक हो।

थायरॉयडिन—दुर्बल, तीव्र गति वाली नाड़ी, सोने में अक्षमता, दिल का संकुचित सा होना, उद्वेग, हृत्पिण्ड में भयानक दर्द, जैसे कोई छुरी चुभो रहा हो।

हृत्शूल के दर्द की औषधियां—कैक्टस, ग्लोबयिन, कैल्मिया, लैकेसिस, मैग्नोलिया, नैजा, स्पाइजिलिया लैट्रोडेक्टस्, आर्सेनिक आदि।

छाती धड़कना—आर्सेनिक, एब्सिन्थ, एमिल-नाइ, नैजा, लैकेसिस, स्पाइजिलिया, एकोनाइट, आइबेरिस आदि।

हृत्पेशी-प्रदाह--एपिस, कैक्टस, डिजि, ग्लोनायन, लैकेसिस नैजा।

डाइलेटेशन—ऐमोन-कार्ब एण्टिम आर्स, कैक्टस, क्युप्रम, एसिड हाइड्रो, लॉरोसि, लिलियम, नक्स, फॉस, टैबेकम।

हार्ट फेलियोर—कॉन्वैले, क्रैटीगस, लैके, नैजा, फैसियोलस, स्ट्रोफैन्थस।

हृत्पिण्ड का बढ़ना—आर्स-आयोड, आयोड, आरम, कैल्मिया, एमिल नाइ, आर्नि, आर्सेनिक, नेट्रम-म्यूर, डिजि, ग्लोनयिन, कैक्टस आदि।

हृत्कम्प-रोग

(1) यदि जीवन-रेखा के भीतर, शुक्र क्षेत्र पर कोई 'द्वीप-चिह्न' अथवा 'वृत्त-चिह्न' हो तथा शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा का रंग पीला हो तो जातक को 'हृत्कम्प-रोग' अर्थात् दिल धड़कने की बीमारी होती है।

(2) यदि जीवन-रेखा के समीप प्रथम मंगल क्षेत्र पर काले रंग का 'विन्दु-चिह्न' हो तो जातक को हृत्कम्प-रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—हृत्कम्प रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

क्रैटेगस Q—कलेजे में धड़कन आरम्भ होने पर किसी अन्य औषध से पूर्व इसकी 5-5 बूँदें, नित्य दिन में दो-तीन वार सेवन करानी चाहिए। हृत्पिण्ड की तेज गति अथवा धड़कन, श्वास-कष्ट नाड़ी की अनियमित गति एवं मानसिक-विषण्णता में यह विशेष लाभकर है।

आइबेरिस Q—यदि 'क्रैटेगस' से लाभ न हो तो इसकी दो-तीन बूंद की मात्रा दिन में दो-तीन वार देनी चाहिए। थोड़े परिश्रम से अत्यधिक स्पन्दन, हाथ-पाँवों की अवशता, जल्दी-जल्दी साँस लेना तथा छोड़ना, थोड़ी-सी उत्तेजना से ही कलेजा धड़कने लगना आदि लक्षणों में हितकर है।

एकोनाइट 6—हृत्पिण्ड में दर्द के कारण छाती में कष्ट होने पर।

डिजिटेलिस 3, 30—अधिक मेहनत तथा अधिक मानसिक-उत्तेजना के कारण हृत्स्पन्दन में।

कैक्टस 3x—हृत्पिण्ड को हिलाये अथवा दवाये जाने का अनुभव, थोड़े परिश्रम से ही कलेजे का धड़कना, पुराना रोग, मृत्यु-भय।

कैनाबिस-इण्डिका—हृत्स्पन्दन के कारण नींद खुल जाना।

लैकेसिस 30—हृत्पिण्ड की क्रिया कभी तीव्र, कभी मन्द होना। स्नायविक-दुर्वलता के कारण हृत्कम्प-रोग, वार-वार पेशाव होना।

कैमोमिला 6—क्रोध के कारण कलेजा धड़कना।

ओपियम 6—भय के कारण हृत्कम्प में।

नक्सवोम 6—अपच के कारण हृत्कम्प में।

आरम मेटालिकम 6x-200—कमजोरी के कारण हृत्कम्प में, विशेषकर वृद्धों के लिए।

कैल्केरिया फास 12x विचर्ण—उद्वेग तथा दुर्वलता के साथ हृत्कम्पन, रक्त-संचालन की क्रिया अनियमित, श्वास लेते समय हृत्पिण्ड में अत्यधिक दर्द आदि लक्षणों में।

फुफ्फुस-रोग

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा श्रृंखलाकार हो तथा मध्यमा

अँगुली के नीचे एक मेहराव जैसी आकृति वाली रेखा भी हो तो जातक को फेफड़ों तथा कण्ठ से सम्बन्धित कोई बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा– फेफड़ों से सम्बन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

फास्फोरस—फुप्फुस (फेफड़े) का दाँया भाग रोगाक्रान्त होने से वाँई करवट लेकर न सो पाने की स्थिति।

सल्फर—फुप्फुस का बाँया भाग रोगाक्रान्त होने पर।

एण्टिम-टार्ट—दोनों फुप्फुस रोगाक्रान्त होने पर। फुप्फुस का शोथ, अत्यन्त श्वास-कष्ट, हृत्पिण्ड की वृद्धि, नाड़ी दुर्बल तथा तेज।

एसिड नाइट्रि—फुप्फुस का पक्षाघात।

एकोनाइट—श्वासनली में रक्त-संचय के कारण प्रदाह।

ब्रायोनिया—छाती में सुई विंधने जैसा दर्द, खाँसी कुछ ढीली तथा कम कष्ट-दायक। जिस ओर दर्द होता हो, उसी ओर करवट दबाकर सोने से कुछ आराम का अनुभव, खाँसते समय हाथों से छाती को दबाकर पकड़ना। दाँई ओर का फेफड़ा अधिक आक्रान्त, सिर-दर्द तथा वमन के लक्षणों में।

एस्किलपियस—ब्रांकाइटिस तथा प्लुरिसी में ब्रायोनिया की भाँति छाती के लक्षण हों, बाँये फेफड़े के नीचे अधिक दर्द हो। ब्रायोनिया से लाभ न होने पर इसे दें।

एमोन-कार्ब—छाती सर्दी से भरी, गले में सांय-सांय शब्द होना, लगातार खाँसी, परन्तु किसी भी तरह नहीं निकलती, जैसे दम अटक रहा हो। कभी-कभी मुख से रक्तस्राव, तीव्र श्वास।

अन्य औषधियाँ—एमोनम्यूर, चेलिडोन, बैराइटाम्यूर, कैप्सिकम, कोपेवा, फेरम-म्यूर, हिपर-सल्फ, ओपियम, कैलि ब्राइक्रोम, सेनेगा, लाइकोपोडियम, सल्फर, फास्फोरस, रस-टाक्स आदि—इनका लक्षणानुसार प्रयोग किया जाना चाहिए। फेफड़े की बीमारियों में न्युमोनिया, ब्रांको-न्युमोनिया तथा ब्रांकाइटिस का मुख्य स्थान है।

प्लूरिसी रोग

यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा उसमें से एक शाखा-रेखा निकलकर गुरु-क्षेत्र पर गई हो तो जातक को 'प्लुरिसी' नामक रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—प्लुरिसी रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

प्रथमावस्था—इसमें एकोनाइट, फेरम फॉस तथा ब्रायोनिया लक्षणानुसार दें। ब्रायो से लाभ न होने पर—एस्क्लिपि।

सुई बिंधने जैसा दर्द—रैननक्यु, ब्रायो, सल्फ, कैलि-कार्ब, एस्क्लपि, कार्बो-एनि।

नीचे के पंजरों तथा छाती के दोनों बगल दर्द होने पर—रैननक्युलस, सल्फ।

दर्द नीचे से ऊपर कन्धे में जाता हो—सल्फर।

हिलने-डुलने से दर्द बढ़ता हो—ब्रायोनिया।

हिलने-डुलने से आराम का अनुभव—रसटॉक्स।

रोगाक्रान्त बगल को दबाकर सोने से कुछ आराम मिले—ब्रायोनिया।

रोगाक्रान्त बगल को दबाकर न सो सके—बैलाडोना।

अत्यधिक प्यास लगे—ऐपोसाई, मर्क, रस-टाक्स।

प्यास न लगे—एपिस।

गरम के बाद ठण्ड लगकर रोग हो—रैननक्युलम।

गरम में अच्छा रहे—एपोसाइ।

ठण्ड में अच्छा रहे—एपिस।

दाँई ओर दर्द हो—एपिस, बैले, बौरैक्स, कैलि-कार्ब, सिना, सल्फ, ब्रायो, एस्क्लापि।

बाँई ओर दर्द हो—स्टैनम, एण्टि आर्स।

पानी जमने पर—एपिस, एपोसाइनम, आर्स, ब्रायो, सल्फर, सेनेगा, कैन्थरिस।

प्लुरा के जल का शोषण करने के लिए—फैसियोलम।

छाती में सुई बिंधने जैसा दर्द ज्वर—एकोनाइट।

अन्य औषधियां—वोरैक्स, एपिस, एब्रोटेनम, कैलि-कार्ब, एस्क्लिपियस ट्यूवरोसा, कार्बो-एनि, सेनेगा, कैन्थर, रैननकुलस, सिला, आर्सेनिक, हिपर-सल्फर तथा नेट्रम सल्फो कार्वल—इनका लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

यक्ष्मा-रोग

(1) यदि अँगुलियों के नाखून ऊँचे और झुके हुए हों एवं मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र से बुध-क्षेत्र के नीचे तक पंखदार आकृति की हो तो जातक को यक्ष्मा (तपैदिक, टी० बी०, थाइसिस, राजयक्ष्मा अथवा क्षय) रोग होता है।

(2) यदि अँगुलियों के नख फावड़े की भाँति चौड़े, टेड़े तथा झुके हुए हों एवं स्वास्थ्य-रेखा पर समान आकृति के अनेक छोटे-छोटे 'द्वीप-चिह्न' हों तो जातक को यक्ष्मा रोग होता है।

(3) यदि अँगुली का नाखून भीतर की ओर अत्यधिक झुका हुआ हो तो भी जातक को क्षय रोग होने की सम्भावना रहती है।

होम्यो-चिकित्सा—यह अत्यन्त कठिन रोग है। इसकी तीन अवस्थायें होती हैं। अन्तिम अवस्था का रोग प्रायः असाध्य हो जाता है। रोग का पता चलते ही किसी अनुभवी-चिकित्सक द्वारा उपचार कराना चाहिए। निम्न-लिखित होम्यो औषधियाँ लक्षणानुसार प्रयोग करने पर हितकर सिद्ध होती हैं—

प्रथमावस्था में—टयुवर्क्युलिनम, एमोन कार्ब, आर्स आयोड, ऐसिड गैलिक, एलियम सैटाइवा, फॉस, हिपर तथा थेरिडियम।

बढ़ी हुई अवस्था में—आर्स आयोड, वैसिलिनम, कार्बो-वेज, कार्बो-एनि, कैप्सिकम, स्टैनम आयोड, ड्रासेरा तथा चायना।

फेफड़ों में पीब पड़ जाने पर—कार्वोवेज, हिपर सल्फ,लैकेसिस, एसिड नाइ, सल्फर, लाइको तथा साइलीशिया।

एकामिका इण्डिका—यक्ष्मारोग में फुपफुस से रक्तस्राव होना। छाती में दर्द तथा प्रातःकाल ताजा रक्त एवं अपराह्न में थक्का-थक्का रक्त निकलना।

फेरम आयोड—फुफ्फुस में पीव एकत्र होने पर दें।

आर्स आयोड—फुफ्फुस-गह्वर में फोड़ा, हेक्टिक-ज्वर, पीव मिश्रित ढेर का ढेर कफ निकलना, तेजी से बल-क्षय, रात को पसीना, दस्त तथा नाड़ी की क्षीणता—इन लक्षणों में दें।

नैप्थ्लाइन—कष्टदायक खाँसी, नींद न आना, तन्द्रा के साथ ही खाँसी, अधिक पसीना आना, दुर्गन्धित दस्त।

अन्य औषधियाँ—एसिड नाइट्रिक, लैरेज्जियल, ड्रासेरा, सेलिनियम, क्रियोजोट, सैल्विया, मैगेनम, लैकनैन्थिस, ट्रिलियम, हिपर, वैलसमम, आयोडम, स्पांजिया, स्टैनम आयोड, स्टैनम, ऐसिड गैलिक, एलियम सैट, कार्बो-एनि, एण्टी मॉनी ऑक्साइड, सॉलिडेगो आदि।

कास (खाँसी) रोग

यदि हथेली का मध्यभाग छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा दोषपूर्ण हो और वह मस्तक-रेखा से मिल रही हो तथा शुक्र-क्षेत्र से निकली एक महीन रेखा जीवन-रेखा को पार करती हुई द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर पहुँच रही हो तो जातक को कास (खांसी) रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—कास रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ऐसिड कार्बोल—यह हूपिंग खाँसी की उत्कृष्ट दवा है। रोग की पहली अवस्था में इसके प्रयोग से खाँसी प्रायः घट जाती है, बाद में **'कास्टिकम'** के प्रयोग से पूर्ण आरोग्य हो जाती है।

इपिकाक—बार-बार खाँसी आना, गले के भीतर घरघराहट, साँय-साँय शब्द, परन्तु निकलता कुछ भी नहीं, वमन।

एमोन-म्यूर—चित्त होकर अथवा दाँई करवट सोने से खाँसी बढ़ती हो।

कोनियम—सूखी दम अटकाने वाली खाँसी, जो सोते ही बढ़े। दिन में न रहे, परन्तु सायंकाल अथवा रात को खूब आये।

स्टैफिसेग्रिया—केवल दिन के समय, खाना खाने के बाद की खाँसी।

एम्ब्रा—कुत्ते की आवाज या ढप-ढप जैसे शब्द वाली खाँसी।

अर्जेण्ट-मेट—फैरिंग्स, लैरिंग्स, ब्रांकाई के पुराने रोग, जोर से हँसने अथवा पढ़ने से खाँसी आना।

बेलाडोना – आक्षेपिक सूखी, दम घुटाने वाली खाँसी।

बोरैक्स—खाँसी के साथ दाँई छाती में दर्द, कफ में सड़ी दुर्गन्ध।

कार्बो-वेज—खाँसी के साथ छाती का चिपक-सी जाना। गरमी में घटना।

कास्टिकम—गले में दर्द के साथ गले की सुरसुराहट वाली खाँसी।

इपिकाक—ठण्ड लगकर आने वाली, दम अटकाने वाली खाँसी। बच्चा खाँसते-खाँसते खड़ा हो जाय। वमन तथा गले में साँय-साँय होना।

फास्फोरस—सायंकाल से आधी रात तक खाँसी का बढ़ना, बाँई करवट तथा चित्त होकर सोने से वृद्धि।

ड्रॉसेरा—हूपिंग अथवा उसी प्रकार की खाँसी, बहुत जल्दी-जल्दी खाँसना।

अन्य औषधियाँ—काईअस, रियुमेक्स, कॉक्कस, क्रोटोन, डल्कामारा, एण्टिम-क्रूड, लैकेसिस, बैराइटा कार्ब, एण्टिम सल्फ, इयुकैलिप्ट्स, कोडिनम, रियुमेक्स, क्यूप्रम-मेट आदि।

दमा-रोग

यदि हथेली में वृहद् चतुष्कोण का आकार छोटा हो तथा दोष पूर्ण स्वास्थ्य-रेखा—मस्तक-रेखा से मिल गई हो एवं शुक्र-क्षेत्र से निकली एक महीन रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई प्रथम-मंगल क्षेत्र पर पहुँच रही हो तो जातक को दमा अर्थात् श्वास की बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा—दमा अर्थात् श्वास-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

स्ट्रैमोनियम—यह स्पैजमाडिक-दमा की उत्तम औषध है।

ब्लाटा ओरियेण्टा—इसके मदर-टिंचर की 5-6 बूँदें थोड़े से पानी में मिलाकर प्रत्येक घण्टे बाद सेवन करें।

कैराविस इण्डिका—आक्षेपिक दमा, छाती का घड़घड़ाना, हृत्पिण्ड में यन्त्रणा, बाँई करवट से न सो पाना, छाती दबाकर पकड़ना तथा केवल हवा चाहना—इन लक्षणों में।

कैलेडियम—अत्यधिक खाँसना, कफ का न निकलना तथा कफ निकल जाने पर तनाव घट जाना।

आर्सेनिक—दमा का खिंचाव आधी रात से बढ़ना, सो न सकना, सिर झुकाकर बैठे रहना, दम बन्द होने का भाव, छाती में दबाव, साँय-साँय शब्द होना तथा कफ न निकलना—इन लक्षणों में दें।

एरालिया—सिर झुकाकर, घुटने तथा कुहनी के ऊपर रखकर बैठना, श्वास लेने में बहुत कष्ट, परन्तु छोड़ने में सरलता।

कॉक्सिनेल्या - आक्षेपिक-दमा में खाँसी तथा श्वास कष्ट घटाने के लिए।

एस्पिडसपर्मा—दमा का प्रबल खिंचाव, कार्डियक-ऐज्मा।

लैकेसिस—सोते-सोते अचानक खिंचाव बढ़ जाना, छाती अथवा शरीर पर कपडे न रख सकना, मुँह के पास हवा नहीं सुहाती, बहुत खाँसने पर थोड़ा बलगम निकलता है, तब खिंचाव कुछ घट जाता है।

अन्य औषधियाँ—कार्बो-वेज, हिपर-सल्फ, मास्कस, नैजा, नैफ्थलाइन, इपिकाक, कैलिबाइक्रोम, कैलि-आयोड, बैडियागा, सैम्बुकस, एम्ब्राग्रिसिया, लोबेलिया आदि का लक्षणानुसार प्रयोग किया जाता है।

उदर-रोग

यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक उदर-रोगों (पेट सम्बन्धी बीमारियों) का शिकार बना रहता है।

होम्यो-चिकित्सा—उदर-रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

पेट फूलना, पेट में वायु जमना—कार्बोवेज, लाइकोपोडियम, चायना, ऐसाफिटिडा, रैफ़ेनस, कैलि-कार्ब, नक्स-वोमिका।

खाई हुई वस्तु का पेट में जाते ही वायु हो जाना—कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, लाइको, नक्स-मस।

आहार करने की खूब इच्छा, परन्तु दो-एक कौर खाते ही मानो पेट भर जाना—लाइकोपोडियम।

आहार करने के पूर्व ही पेट पूरा भरा हुआ अनुभव होना—चायना।

आहार के समय पेट भरा अनुभव होना—कैलि-कार्ब, नक्स-मस, सल्फर, लाइकोपोडियम, साइक्लामेन।

आहार शेष होने पर ही—ग्रैफ, नैट-कार्ब. नक्स, अर्जेण्ट, चायना।

आहार करने के एक दो घन्टे बाद पेट भरा लगना—पल्सेटिला।

दो घंटे बाद पेट भरा अनुभव होना—एनाकार्डियम।

पेट में अम्ल-संचय होना—नक्स-वोमिका, आइरिस, ऐसिड-सल्फ रोगिनिया।

पेट में जलन होना—आर्सेनिक, विस्मथ, कार्वोविज, आइरिस, लाइकोपोडियम, फॉस, ऐसिड सल्फ, रोविनिया।

पेट भरते ही वमन होना—विस्मथ।

खाने-पीने के बाद पेट में दर्द होना—स्टैफिसेग्रिया।

स्पर्श सहन न होने वाला दर्द होना—आर्स, बेले, कैलि-बाई, फॉस।

पेट में गोला अथवा थक्का जैसा अनुभव होना—चायना, पल्सेटिला, एविस, विस्मथ, कैल्केरिया-कार्ब।

पाकस्थली का घाव—अर्जेण्ट, आर्स, हाइड्रैस्टिस, कैलि-बाइ फॉस, सैन्बुकस, यूरेन-नाइ।

पाकस्थली की गड़बड़ी के कारण छाती में जलन—कैल्केरिया-कार्ब, चायना, ग्रैफाइटिस, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, लाइको, नेट्रम-सल्फ, पल्स, सिपि।

पाकस्थली एवं अन्त्र की वृद्धि—जैन्थोरिया, एपिकोलिया।

पाकस्थली से भयानक रक्तस्राव—हाइड्रैस्टिन सल्फ।

तिल्ली-रोग

यदि मस्तक-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचकर 'क्रास'-चिह्न बनाती हो, द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा शुक्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक को प्लीहा-वृद्धि (तिल्ली बढ़ जाना) रोग होता है। साथ ही उसे संतत विषम-ज्वर-रोग भी हो सकता है।

होम्यो-चिकित्सा—निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करने से तिल्ली-रोग में लाभ होता है—

सिएनोथस—तिल्ली-प्रदेश में बाँई ओर गहराई में दर्द, सुई जैसी चुभन, बढ़ी हुई तिल्ली, वर्षाऋतु में कष्ट का बढ़ना, एवं तिल्ली के पुराने रोग में हितकर है। तिल्ली की जगह दर्द होने के साथ रक्त की घातक कमी में विशेष लाभकर है।

चायना (सिनकोना)—बढ़ी हुई तिल्ली, धीरे चलने से तिल्ली में सुई चुभने जैसा दर्द, स्पर्श करने से दर्द तथा जोर से दबने पर आराम का अनुभव तथा हवा के झौकों का अच्छा न लगना।

ऐरैनिया डायेडेमा—क्विनीन के प्रयोग से मलेरिया के रुक जाने के फलस्वरूप तिल्ली का बढ़ना, बरसाती मौसम में रोग बढ़ना, ढीलापन, सुस्ती, प्रति दूसरे दिन निश्चित समय पर रोग में वृद्धि, रोगी को लगातार ठण्ड लगना।

इग्नेशिया—तिल्ली का सूजकर कड़ा पड़ जाना, दबाने से पेट तथा तिल्ली में दर्द, पेट के बाँये भाग में दर्द, रोगी का दर्द वाले पार्श्व में लेटना, उद्वेग की प्रधानता, दुःख तथा चिन्ता से घिरना।

आर्टिका युरेन्स—मलेरिया के कारण तिल्ली का बढ़ना।

रेननक्युलस बल्बौसस—तिल्ली-प्रदेश में दुखन, चुभन तथा धड़कन का अनुभव।

नेट्रम-म्यूर—मलेरिया के कारण तिल्ली का सूजना, तिल्ली-प्रदेश में चुभन, रोगी का रक्तहीन हो जाना, शरीर के ऊपरी भाग का दुर्बल हो जाना।

अर्निका—गंभीर रोग होने पर भी रोगी यह कहे कि 'कुछ नहीं है।

ब्रायोनिया—जिगर तथा तिल्ली में सुई चुभने जैसी टीस, तिल्ली का सूजकर कड़ा पड़ जाना जरा सी हरकत से कष्ट बढ़ना, शारीरिक तथा मानसिक विश्राम से आराम का अनुभव दर्द वाली जगह की ओर लेटना।

जलोदर रोग

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक को जलोदर रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—जलोदर रोग (जिसमें पानी भर जाने के कारण पेट नगाड़े की भाँति फूल जाता है। में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है—

एपिस Q, 1x या 6—इस औषध के रोगी को प्यास नहीं लगती, पेशाब वहुत कम आता है, गर्मी से कष्ट वढ़ता है। सूजन, जलन और डंक लगने जैसी टीस के अनुभव वाले जलोदर-रोगी के लिए यह विशेष हितकर है।

ऐपोसाइनस कैन्नेबिनम Q—यह पेट में जल-संचय तथा सम्पूर्ण शरीर में शोथ की यह मुख्य औषध है। इस औषध के रोगी को प्यास भी लगती है।

आर्सेनिक-एल्ब 30—मसाना, हृदय तथा जिगर में जल-संचय होने पर इसका प्रयोग किया जाता है। त्वचा का पारदर्शन होगा, बेहद प्यास लगना, परन्तु पानी पीते ही वमन हो जाना—इस औषध का लक्षण है।

ऐसेटिक ऐसिड 3, 30—जब चेहरे तथा शरीर के निचले भाग में सूजन हो जाय तथा पेट में पानी भर जाय, तव यह उपयोगी सिद्ध होती है। प्यास की दृष्टि से यह औषध एपिस तथा आर्सेनिक के बीच की है। इस औषध के झलोदर-रोगी को खट्टी डकारें आती हैं। पेट से खट्ठा पानी उछलकर मुँह में भर आता है तथा दस्त आदि आते हैं।

लियैट्रिस स्पाईकेटा Q—सम्पूर्ण शरीर का शोथ, जिसमें पेशाब खुल कर आता है। औषध के मूल-अर्क की 10- 0 बूँदें दिन में कई बार देनी चाहिए।

औक्सीडेनड्रौन Q—शरीर के किसी भी स्थान में जल-संचय होने पर यह औषध लाभ करती है। यदि पूर्वोक्त किसी भी औषध से लाभ न हो, पेशाब का अभाव दिखाई दे, बैठने पर भी श्वास कठिनाई से आये तथा लेटना असंभव हो जाय, तब इसका प्रयोग हितकर रहता है।

गुर्दे के रोग

(1) यदि दोनों हाथों में हृदय-रेखा टूटी हो तथा प्रथम मंगल-क्षेत्र पर, मस्तक-रेखा के ऊपर, श्वेत-बिन्दु अथवा दाग-चिह्न हो तो जातक को गुर्दे की बीमारी होती है।

(2) यदि मंगल-क्षेत्र के समीप मस्तक-रेखा पर सफेद रंग का 'दाग' हो तो जातक को गुर्दे से सम्बन्धित कोई रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—गुर्दे से सम्बन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

मूत्र-ग्रंथि-शोथ (नेफ्राइटिस) की मुख्य औषधियाँ—एपिस मेल, एकोनाइट, कैनेबिस सैटाइवा, कैन्थरिस, आर्सेनिक, सल्फर, मर्क-कोर तथा कौक्स-लिम्फ।

मूत्राशय-प्रदाह—एपिस, कैन्थरिस, बरबेरिस, टौरिविन्थीना, नक्स-वोमिका, कोपेवा, फेरम-फास, सेनेगा, बेलाडोना, कास्टिकम, लौलिडैगो।

मूत्राशय का पक्षाघात—ओपियम, कैन्थरिस, सिकेल कौर, बेलाडोना, एकोनाइट।

मूत्राशय का पुराना शोथ—कैन्थारिस, पल्सेटिला बेन्जोइक एसिड, चिलेफिला।

मूत्राशय का अर्बुद—कैल्केरिया-कार्ब।

गुर्दे की सूजन (मूत्र ग्रंथि प्रदाह)—टैरिबिन्थीना, एपिस मेल, अर्सेनिक, ऐपोसाइनस।

गुर्दे की पथरी—हाइड्रैन्जिया, सोलिडैगो, लाइकोपोडियम, अर्टिका युरेन्स, कल्केरिया कार्ब, ओसिमम कैनम, सार्सापैरिला, डायस्कोरिया।

मूत्रकृच्छ्रता—स्पिरिट आफ कैम्फर, कैन्थरिस, कोपेवा, ऐपिस, टेरि-

विन्थना, क्लेमेटिस, वोरैकन।

इन्युरेसिस (पेशाब निकल पड़ना)—वेलाडोना, सल्फर, सीपिया, कास्टिकस, पल्सेटिला, रस-टाक्स, क्रियोजोट, पैट्रोसि।

हेमेच्यूरिआ (पेशाव में रक्त आना)—अर्निका, टैरेविन्थि, चिनिनम सल्फ, हैमेमेलिस, थ्लैस्पी, कैनेबिस-सैटाइवा।

मूत्र-ग्रंथियों में रक्त-संचय—वेलाडोना, टैरिविन्थीना, वेसिकेरिया चिमेफिला।

गुर्दे का मूत्र निकालना बन्द कर देना—आर्सेनिक एकोन, क्युप्रस, टैरिविन्थीना।

आँतों के रोग

यदि हथेली मुलायम हो, हाथ की रेखाऐं पीले रंग की हों, नाखून लाल रंग के तथा धव्वेदार हों एवं स्वास्थ्य, रेखा टूटी हुई हो तो जातक को आँतों से संवन्धित कोई वीमारी होती है।

होम्यो चिकित्सा—आँतों से सम्वन्धित रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है।

बेलाडोना—आँतों का प्रदाह, पाकस्थली अथवा उदर का प्रदाह, ठण्ड लगकर एण्टेराइटिस, पेरिटो नाइटिस, रोगाक्रान्त-स्थान पीड़ा, थोड़ा भी हिलने-डुलने अथवा स्पर्श करने पर तकलीफ का बढ़ना—इन लक्षणों में प्रयोग करें।

लैकेसिस—पेट में तनाव पूर्ण दर्द, हाथ न लगा पाना, शरीर के कपड़ों का वोझ भी नहीं सुहाता, श्वास-कष्ट, पेट फूला हुआ, अजीर्ण, क्षीण-नाड़ी, दस्त-वमन, पेट में जलन तथा अत्यन्त दुर्गन्धित पाखाना आदि लक्षणों में हितकर है।

हाइड्रोस्टिक—बड़ी आँत के वहुत समय तक प्रदाहित रहने पर, उससे आँव अथवा श्लेष्मा का निकलना, पाकाशय में दर्द, पेट में खालीपन, मुँह का स्वाद तीता-इन लक्षणों से दें।

अर्सेनिक—छोटी आँत के प्रदाह में नाभि के चारों ओर जलन जैसा

तीव्र दर्द, अत्यधिक कमजोरी तथा सुस्ती, खाने-पीने के बाद वमन, पानी जैसा अथवा रक्त-मिश्रित वमन, लगातार तीव्र प्यास, एवं थोड़ा पानी पीने पर थोड़ी देर के लिए तृप्ति का अनुभव होना—इन लक्षणों में दें।

एकोनाइट—छोठी आँत के प्रदाह में ज्वर तथा प्रदाह घटाने के लिए इसका प्रयोग करें।

बैलाडोना—ज्वर, प्रदाह, शीत, लाल चेहरा, सिर में दर्द तथा पतले दस्त के लक्षणों में दें।

कोलोसिन्थ—छोटी आँत में दर्द के साथ ज्वर, पाखाने का वेग, पेट का बहुत फूलना, नाभि के चारों ओर सिकुड़ने जैसा दर्द, सम्पूर्ण पेट में दर्द तथा मिचली के लक्षणों में।

पोडो फाइलम—छोटी आँत में सामान्य प्रदाह के साथ अतिसार प्रातः काल रोग बढ़ना, सम्पूर्ण शरीर का रंग पीला तथा पेट फूलना आदि लक्षणों में।

अन्य औषधियाँ—पल्सेटिला, इपिकाक, विरेट्रम-ऐल्ब पाइरोजेन, मैग्नेशिया फॉस आदि औषधियों का भी लक्षणानुसार प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है।

अम्ल-पित्त रोग

यदि चन्द्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक को 'अम्लपित्त' रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—अम्ल पित्त रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभकर सिद्ध होता है—

अर्जेन्टम नाइट्रिकम—पेट में अत्यधिक अम्ल, पाकाशय के रोग के साथ डकार आना, जी मितलाना, पेट में इधर उधर दर्द फैलना, पेट में हवा भरना, अपच-भोजन के कारण छाती में जलन, मीठा, नमक तथा पनीर की विशेष इच्छा।

लाइकोपोडियम—पेट में हवा, कब्ज, जीभ पर सफेदी—इन लक्षणों के साथ छाती में जलन के साथ दर्द, खट्टी डकार, पेट फूला हुआ, हवा भरी हुई।

पल्सेटिला—फीका स्वाद, दस्त, मैली जीभ—इन लक्षणों के साथ छाती में जलन।

नक्स-वोमिका—खाने के बाद भोजन-नली में जलन, डकार आने में कठिनाई, भोजनोपरान्त भोजन-नली में पानी उठ-उठ कर आना, पनीले डकार, साँस में खट्टापन तथा बुसे डकार आना।

ब्रायोनिया—खाने के बाद कड़वे-खट्टे डकार आना और उनमें भोजन का स्वाद भी रहना, पेट में भारीपन का अनुभव।

कार्बो-वेज—बुसे तथा खट्टे डकार आना, पाचन क्रिया का अत्यन्त शिथिल हो जाना, पेट के ऊपरी भाग में हवा भारी रहना, कब्ज की अपेक्षा दस्तों की अधिक प्रवृत्ति।

चायना - सम्पूर्ण पेट में हवा भारी रहना, फीके अथवा खट्टे डकार, पेट की हवा से दर्द, डकार आने पर कुछ हल्केपन का अनुभव, भोजन-नली में वक्षोस्थि के पीछे भोजन पड़े रहने की अनुभूति सब कुछ कड़वा लगना।

ऐसिड लैक्टिक—खाई हुई वस्तु का हजम न होना। गरम, कड़वी तथा तीती डकारें आना। गले में जैसे एक गोला सा अड़ा हो।

ऐसिड सल्फ—वमन, उद्गार, दाँत खट्टे होना, छाती में जलन।

फेरस-सल्फ—डकार के साथ खाई हुई वस्तु का मूंह में, पानी के रूप भर आना।

मैग्नेशिया-कार्ब—वायु जमना, खट्टी डकारें आना, छाती में जलन, स्टार्च या दूध नहीं सुहाता।

आइरिस वर्स—मुख, पाकस्थली तथा आँतों में आगकी लपट जैसी जलन, मुंह से लार बहना, गोंद जैसा गाढ़ा वमन, पित्त की वमन सारा साफ अम्ल हो जाना।

मस्तिष्क सम्बन्धी रोग

यदि मस्तक-रेखा पर अनेक छोटी-छोटी रेखाऐं आर-पार हों तथा उस पर दाँत जैसे चिह्न बना रहे हों तो जातक को सिर-दर्द तथा मस्तिष्क सम्बन्धी अन्य रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—मस्तिष्क सम्बन्धी विभिन्न रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

साइक्लैमेन—मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण स्थिर-मन से चिन्ता करने में असमर्थ तथा कष्ट से नींद आना आदि लक्षणों में।

आर्निका—सिर गरम तथा शरीर ठण्डा रहे—इन लक्षणों वाले रोगों में।

ऐसिड कार्बोल—सिर के मध्य भाग में जलन होने पर।

ग्लौनायिन—मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह के कारण रोना-चिल्लाना तथा इसके साथ ही सिर में टपकमय दर्द तथा वमन के लक्षणों में।

ऐस्टिरियस—सिरके ऊपर आग रखी हुई जैसी अनुभूति, मस्तिष्क में रक्ताधिक्य सिर-दर्द का प्रातः-सायं होना, दोपहर में न रहना।

कैलि ब्रोम—मस्तिष्क में रक्त शून्यता, हाथ-पाँव ठण्डे, अच्छन्नाभाव मस्तिष्क की दुर्बलता, स्मृति शक्ति का लोप, सिर चकराना, हाथ-पाँव काँपना एवं अधिक इन्द्रिय-सेवन, परिश्रम, शोक अथवा चिन्ता के कारण उत्पन्न मस्तिष्क रोगों में।

इरिडियम क्लोराइड—मस्तिष्क में गलाई हुई धातु के भरे रहने जैसी अनुभूति, सिरभारी, दाँई ओर का सिर-दर्द।

निकोलम—निर्दिष्ट समय के अन्तर से आक्रमण शील सिर-दर्द, निरन्तर सिर-दर्द वना रहना, प्रातः से दोपहर तक वृद्धि।

कार्बो-सल्फ—सिर में अनेक प्रकार के शब्द कान मानो बन्द हो गए हैं।

ऐकोनाइट—ठंड लगने के कारण सिर में दर्द, टपकन, आखों तथा जवड़ों में दर्द।

आर्जेन्ट नाईं—सिर चकराना, बीच-वीच में भयानक अधकपारी का दर्द, ऋतुकालीन तथा वाद में सिर-दर्द।

ब्रायोनिया—सामने की नसों, कपाल तथा गर्दन में दर्द। हिलने-डोलने, खाँने तथा आँखें खोलने पर वृद्धि।

अन्य औषधियाँ—इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार—एण्टिम-टार्ट, कैक्टस, कैड्मियम, कैनाबिस इण्डिका, कैल्केरिया ऐसेट, सिड्रन, निकोलम, फेरम, क्लोरेल, चायना, काक्युलस, क्रार्वोनियम, सल्फ, नैट्रम कार्व मास्कस, ऐसिड कार्व, क्युप्रम सल्फ, जेलीमियम, वैलाडोना, इग्नेशिया, इपिकाक आदि औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है।

मृगी-रोग

यदि हाथों की अँगुलियाँ टेढ़ी और नुकीली हों तथा ग्रह-क्षेत्र दबे हुए निम्न हों तो जातक को 'मृगी-रोग' होता है।

होम्यो-चिकित्सा—मृगी-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करने से लाभ होता है—

आर्टिमिसिया—दौरों का बार-बार रुक-रुककर आना, मासिक-स्राव की अनियमितता, शुक्र-क्षय के कारण मृगी-रोग तथा प्रथम रजोदर्शन की आयु में रोग होना आदि लक्षणों में।

एब्सिन्थ—पहले सिर चकराना, फिर अकड़न के साथ दाँती लगना या दाँत किटकिटाना, जीभ काटना। सम्पूर्ण ज्ञान का लोप न होना। शिशुओं पर दौरा अधिक समय तक रहना। दौरे के समय इस औषध के मूल-अर्क की 2-1 बूँदें जीभ पर रखने से दौरा (फिट) दूर हो सकता है।

एमिल नाइ—अज्ञानभाव के साथ शारीरिक अकड़न में।

कैलिब्रोम—इस औषध की मात्राएँ क्रमशः बढ़ाकर देते रहने से बीमारी में लाभ होता है।

एडोनिस वर्नेलिस—इसके मदर-टिंचर की 4-5 बूंद की मात्रा में नित्य 3-4 बार देते रहने से लाभ होता है।

एसिड हाइड्रो—फिट आरम्भ होने से पूर्व मुँह में पानी भर आना, वमन, मिचली तथा मृगी-जैसी (वास्तविक मृगी नहीं) अकड़न में दें।

फेरम सियानेटम तथा एस्टिरियस—ये दोनों भी मृगी रोग की उत्तम औषधियाँ मानी जाती हैं।

ब्यूफो—फिट आरम्भ होने से पूर्व जोर से चिल्लाना। जननेन्द्रिय की उत्तेजना ही रोग का कारण हो। फिट के बाद सोना अथवा ऋतुकालीन फिट में हितकर है।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है— क्यूप्रममेट, जिंकम, हायोसियामस, सोलेनम, कैरो-

लिन, बर्वेना, अर्जेण्टनाइ, इग्नैन्थि, प्लम्बम, सफर, आर्टिमिसिया, कास्टिकम, बैलाडोना, गयोनायिन, कैल्केरिया, काक्युलस, साइलीशिया आदि।

उन्माद रोग

(1) यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'क्रास' चिह्न हो,मस्तक रेखा ढलावदार तथा लम्बी हो, चन्द्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा अथवा बहुत नीचा हो, शनि-क्षेत्र दवा हुआ तथा मध्यमा अँगुली टेढ़ी हो तो जातक को उन्माद-रोग (पागलन) होता है।

(2) यदि मस्तक-रेखा हथेली के आर-पार चली गई हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो भी जातक को उन्माद-रोग होने की सम्भावना रहती है।

होम्यो-चिकित्सा—उन्माद-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभ करता है—

प्लैटिना—प्रसूता, गर्भवती तथा कुमारी (अविवाहिता) स्त्रियों के कामोन्माद में।

पैरिस क्वाड्रि—निरन्तर वकते रहना।

कैन्थरिस—स्त्रियों की संगमेच्छा की प्रवलता, कामोन्माद।

एक्टिया-रेसि—प्रसूति-गृह में कामोन्माद। प्रलाप, चिल्लाना, भूत का भय।

कैलि-फास—उन्मत्तता एवं मानसिक-विकृति, सूतिकोन्माद।

हायोसियामस—प्रसूतावस्था अथवा प्रेम में निराशा के कारण उन्माद। सभी पर अविश्वास, विष खिला देने का भय से हल्के ढंग का उन्माद, कभी हँसना, कभी गाना-नाचना आदि। कामोन्माद, निर्लज्जता का प्रदर्शन आदि।

सल्फर—सामान्य वस्तु अथवा व्यक्ति को महत्वपूर्ण समझना, सभी वस्तुऐं सुन्दर दिखाई दें। पुराना उन्माद-रोग। कलह-प्रियता, धर्मोन्मत्तता, अहँकार, भ्रांत विश्वास, गन्दा रहना।

स्ट्रैमोनियम—लज्जाशील साध्वी स्त्री का अचानक ही निर्लज्ज हो

जाना, बकवास करना, कामोन्मत्तता के लक्षण, शरीर से एक प्रकार की गन्ध निकलना। अत्यन्त क्रोध का भाव, डराने वाला उन्माद रोग।

बेलाडोना—तीव्र प्रलाप के लक्षण, आँख की पुतली फैली हुई तथा निश्चल, भयानक दृष्टि, बीच-बीच में क्रोध प्रकट करना।

कैनाबिस इण्डिका—भ्रमपूर्ण अविश्वास अथवा काल्पनिक वस्तुऐं देखना।

अन्य औषधियाँ—इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है—विरेट्रम-एल्ब, क्युप्रम, फास्फोरस, टेरेण्टुला, ऐबिसिन्थियम तथा साइक्यूटा, आदि।

पित्तज आन्तरिक-कष्ट

यदि हथेली की त्वचा तथा रेखाओं का रंग पीला हो तो जातक पित्त-प्रकृति का होता है तथा उसे आन्तरिक कष्ट बने रहते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—पित्त प्रकृतिजन्य भीतरी कष्टों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एसिड लैक्टिक—खाई हुई वस्तु का हजम न होना। गरम, तीती तथा कड़वी डकारें आना। पेट से मुँह तक जलन। गले में गोला-सा अड़े होने का अनुभव।

ऐसिड-सल्फ—वमन, उद्‌गार, दाँत खट्टे होना, छाती में जलन।

ऐसिड सैलिसाइलिक—पेट में वायु एकत्रित होने के साथ क्रमशः डकारें आना।

फेरम-सल्फ—अम्ल-पित्त, डकार के साथ मुँह में पानी भरना अथवा खाई हुई वस्तु का उठना।

मैग्नेशिया-कार्ब—खट्टी डकारें आना, छाती में जलन, वायु जमना, स्टार्च तथा दूध न सुहाना।

नेट्रम-फॉस—खट्टी डकारें, खट्टी वमन; खट्टा स्वाद, पेट-फूलना, खट्टी गन्धयुक्त पाखाना।

एसिड नाइट्रा—वायु तथा अम्ल, वृद्धों का अम्ल-रोग, अजीर्ण तथा उसके साथ हृत्पिण्ड की कोई बीमारी।

नक्स-वोमिका—भली-भाँति हजम न होना, पेट में नोंचने, चबाने जैसा दर्द, खट्टी वमन, कब्ज, थोड़ा-थोड़ा पाखाना होना, गले में अँगुली डालकर वमन करने की कोशिश करना।

रोबिनिया—मुँह में खट्टा पानी भर आना, खट्टी वमन, दाँत खट्टे हो जाना।

आइरिस-वर्स—मुख; पाकस्थली तथा आँतों में आग की लपट जैसी जलन, मुँह से लार बहना, अम्ल की वमन आदि।

लाइकोपोडियम—पेट में वायु जमना, खट्टी डकारें आना, खट्टी वमन, मुँह का स्वाद खट्टा, शिशु को हरे रंग का पाखाना, दूध तथा दही जैसी वमन।

हिपर-सल्फ—कोई भी खाना हजम नहीं होता। सावधानी पूर्वक खाने पर भी पेट का गड़बड़ हो जाना, मुँह में खट्टापन, पेट में ऐंठन जैसा दर्द एवं कुछ खाने पर दर्द का घटना आदि लक्षणों में प्रयोग करें।

अन्य औषधियाँ—एसिड हाइड्रो, काक्युलस, लैकेसिस, चेलिडोन आदि लक्षणानुसार।

पाण्डु रोग

यदि स्वास्थ्य-रेखा पर कहीं नक्षत्र चिह्न तथा द्वीप-चिह्न—दोनों ही हों तथा उसी जगह एक काले रंग का 'तिल' जैसा दाग-चिह्न भी हो तो जातक को पाण्डु अर्थात् पीलिया रोग होता है।

होम्यो-उपचार—पाण्डु अर्थात् पीलिया रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

क्रोटेलस—खतरनाक स्थिति का रोग, रक्त-विषाक्तता।

चेलिडोन—शरीर की त्वचा, मुँह, आँख, पेशाब आदि सभी का पीले रंग का हो जाना।

डिजिटेलिस—लिवर-रोग के साथ पीलिया, लिवर को कड़ापन, बड़ा, तनावपूर्ण, धीमी नाड़ी, पेशाब थोड़ा तथा पाखाना सफेद अथवा फीके रंग का।

डॉलिकस—आँखों का पीला होना तथा पाखाना सफेद।

हाइड्रैस्टिस—लिवर में दर्द, आँखों तथा पेशाब में पीलापन।

बर्बेरिस—चमकदार पीला अथवा खून जैसे लाल रंग का पेशाब होने पर।

नक्स-वोमिका—अत्यधिक क्विनीन सेवन के कारण अथवा शराबियों के कामला रोग में।

फास्फोरस—लिवर सिरोसिस की अन्तिम दशा में शोथ, कामला, उदरी, लिवर में तनावपूर्ण दर्द।

एमोन बेंज—पित्त की क्रिया रुकी रहने के कारण होने वाला कामला।

माइरिका—लिवर की विकृति के कारण पित्त उत्पन्न होकर कामला।

नेट्रम-सल्फ—मिचली, खट्टी वमन, मुँह में खट्टा-तीता स्वाद एवं कामला।

मर्कसॉल—लिवर में प्रदाह, तनाव, दर्द, पित्त निकलने में कमी, लिवर में कड़ापन, बड़ा शोथ, कामला।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की आवश्यकता भी पड़ सकती है—पोडोफाइलम, आयोडम तथा कार्डुअस आदि।

वात-रोग

(1) यदि जीवन-रेखा से एक शाखा-रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तो जातक को वात (गठिया) रोग होता है।

(2) यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकली कोई रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई आगे निकल गई हो तो जातक को गठिया-वात रोग होता है।

(3) यदि स्वास्थ्य-रेखा घिसी हुई-सी दिखाई दे तो जातक को गठिया-वात होने की सम्भावना रहती है।

(4) यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तो भी गठिया-वात रोग होने की सम्भावना रहती है।

होम्यो-चिकित्सा—गठिया-वात रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

कैलि आक्जे—लम्बेगो तथा कमर के दर्द में अत्यधिक यन्त्रणा होने पर।

कैलफ्लोर—पहले चलते समय दर्द। थोड़ा चलने के बाद दर्द का न रहना।

फेरम-मेट—कमर में वात रुके दर्द में हितकर।

सैक्रोटिन—प्रायः सभी प्रकार के कमर-दर्द में लाभकर हैं।

आर्टिका यूरेन्स—इसके मदर-टिंचर की 5 बूंद की मात्रा में गरम पानी के साथ 4-5 घंटे के अन्तर से दिन में 3-4 बार लेते रहने से हर प्रकार के वात-रोग में लाभ होता है।

रस-टाक्स—जबड़े का वात. अन्य प्रकार का शरीर में वात-दर्द।

ऐब्रोटेनम—कन्धे, कलाई, एड़ी का वात। आक्रान्त-स्थान फूलने के पहले दर्द, जो छाती तक जाता हो।

ऐसिड लैक्टिक—कलाई; कुहनी, अँगुलियों की गाँठों का रोगाक्रान्त हो। गाँठों तथा संधि-स्थलों के वात में हिलने-डुलने पर दर्द की वृद्धि।

एंगस्टुरा—दोनों घुटनों तथा प्रत्यंगों की गाँठों के भीतर मरमर शब्द। गाँठ तथा पेशी का कड़ी तथा जकड़ी रहना।

अन्य औषधियाँ—इस रोग में लक्षणानुसार इन औषधियों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ सकती है—एमोनबेंज, कॉल्चिकम, ऐसिड लैक्टिक, कैलि हाइ, एमोन फॉस, पेट्रोलियम, ऐब्रोटैनम, एण्टिम क्रूड, एसिड बैन्जो, ब्रायोनिया, रेडियम, केल्केरिया फॉस, कास्टिकम, कालोसिन्थ, इलाटिरियम, फेरम-मेट, बर्बेरिस गुयेकम, एमोन फास, कैलि-हाइड्रो, मैग कार्ब, पैट्रोलियम, स्ट्रिक्निनम तथा स्पाइजेलिया आदि।

पक्षाघात (लकवा) रोग

(1) यदि शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो, हृदय-रेखा पर आड़ी रेखाएँ हों, हथेली की त्वचा कोमल हो तथा नाखून चिपटे हों तो जातक को पक्षाघात (लकवा अथवा फ़ालिज) रोग होता है।

(2) जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा से मिलती हो, वहीं यदि लाल रंग का तिल अथवा तिल जैसा चिह्न हो एवं स्वास्थ्य-रेखा विभिन्न रंगों वाली हो तो जातक को पक्षाघात रोग होता है।

(3) मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल पर यदि लाल रंग का चिह्न हो तो भी जातक पक्षाघात का शिकार बनता है।

(4) स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के मिलन-स्थल पर लाल रंग का चिह्न हो, साथ ही शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो एवं जीवन-रेखा के समाप्ति-स्थल पर भी नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक की पक्षाघात रोग के कारण मृत्यु होने की सम्भावना रहती है।

(5) यदि जीवन-रेखा पर एक 'द्वीप-चिह्न' हो, शनि-क्षेत्र पर एक 'जाल-चिह्न' हो तथा शनि-क्षेत्र से ही एक द्वीप-चिह्नयुक्त रेखा निकलकर जीवन-रेखा से जा मिली हो, साथ ही मस्तक-रेखा पर भी द्वीप अथवा बिन्दु-चिह्न हो तो जातक पक्षाघात का शिकार बनता है। ऐसी रेखाओं वाले जातक की अँगुलियों के नख भी शीघ्र टूटने वाले हों तो प्रबल पक्षाघात होता है।

होम्यो-चिकित्सा—पक्षाघात रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

कास्टिकम—मुँह, जीभ मुँह के एक ओर अथवा अर्द्धाङ्ग का पक्षाघात, ठण्ड लगकर हुआ पक्षाघात।

एन्हेलोनियम—अर्द्धाङ्ग तथा निम्नांग का पक्षाघात।

सेलिनियम अर्जेण्ट—स्वर-यन्त्र का पक्षाघात, भाषण देने अथवा गाने के बाद गला बैठ जाना।

अन्य औषधियाँ—इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ सकती है—लोलियम, एनाकार्ड, इलैप्स, काक्युलस, कॉल्चिकम, कोनियम, नक्स मस्केटा, जेल्सीमियम, एस्ट्रैगेलस, प्लम्बम, फाइजस्टिग्मा, मेजेरियम, वैराइटा-कार्ब, एसिड-म्यूर, लैथाइरस, मैंगेनम तथा मेजेरियम आदि ।

हिस्टीरिया रोग

(1) यदि स्त्री के हाथ की त्वचा कोमल हो तथा हथेली में जंजीर जैसी आकृति की अत्यन्त महीन, अनेक छोटी-छोटी रेखाएँ तो उसे 'हिस्टीरिया' की बीमारी होती है ।

(2) यदि स्त्री के हाथ का बाहरी आकार अत्यधिक सिकुड़ा हुआ हो तो भी उसे 'हिस्टीरिया' नामक रोग होता है ।

होम्यो-चिकित्सा—हिस्टीरिया में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

काक्युलस—ऋतु-दोष के कारण उत्पन्न हिस्टीरिया, फिट के समय अत्यधिक श्वास-कष्ट । ऋतुस्राव बन्द होकर मानसिक-विकार उत्पन्न होना ।

इग्नेशिया—मूर्च्छावायु, पाकस्थली से किसी पदार्थ के ऊपर उठकर गले में घूमने-फिरने जैसी अनुभूति ।

नक्स-मस्केटा – कभी हँसना, कभी रोना, अत्यधिक अवसाद, केवल सोने की इच्छा, फिट (दौरे) आना ।

मॉस्कस—अचानक ही छाती में अकड़न जैसा अथवा गलनली में संकुचन जैसा एक तरह का दर्द, रुग्णा की साँस बन्द होकर दम अटकने जैसी अनुभूति । परिवर्तन-शील मिजाज । अनियमित ऋतु जन्य हिस्टीरिया ।

एसाफिटिडा—हिस्टीरिया, पेट में वायु जमना, पेट फूलना, पुराना उदरामय अचानक बन्द होकर हिस्टीरिया हो जाना ।

वैलेरियाना—वायु तथा स्नायु प्रधान धातु, परिवर्तनशील मिजाज, कभी उद्धत, कभी विनम्र, कभी हँसना, कभी रोना ।

टैरेण्टुला हिस्पैनिया—फिट का बहुत देर तक रहना अथवा बार-बार आना।

एक्विलेजिया—फिट आने से पूर्व पेट में एक गोला-सा उठकर ऊपर को ठेलता है।

अन्य औषधियाँ—इनके अतिरिक्त लक्षणानुसार—सिमिसिफ्यूगा, कॉलोफाइलम, पल्सेटिला, अर्जेण्ट, प्लैटिनम, सिपिया, लिलियम ट्रिग आदि औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

ज्वर-पीड़ा

(1) यदि हथेली का मध्य भाग मुलायम तथा खुश्क त्वचा वाला हो तो जातक को ज्वर-पीड़ा होती है।

(2) यदि अनामिका अँगुली के पृष्ठभाग में, किसी भी पर्व पर 'काला दाग-चिह्न' हो तो जातक ज्वर-पीड़ित रहता है।

होम्यो-चिकित्सा—ज्वर-पीड़ा में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ऐसिडकार्बोलि—सैप्टिक, सूतिका, मोरी की गैस से उत्पन्न ज्वर, मैलेरिया, सविराम ज्वर, प्लीहा-संयुक्त ज्वर तथा धीमी प्रकृति आदि के सभी ज्वरों में हितकर है।

ऐमोन-म्यूर—मज्जागत ज्वर एवं किसी भी प्रकार न छूटने वाला ज्वर।

अर्जेन्ट-मेट—दोपहर को 1 बजे आकर, एक घण्टे बाद हट जाने वाला ज्वर।

आर्स-आयोड—पौनः पुनिक ज्वर तथा पसीना।

एक-ज्वर तथा रेमिटेण्ट ज्वर—में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है—एकोनाइट, बैलेडोना, ब्रायोनिया, जेल्सिमियम, फेरम-फॉस, एण्टिम क्रूड, एण्टिम टार्ट, आर्सेनिक, यूपेटोरियम पर्स, इपिकाक आदि।

सर्दी के ज्वर—में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है—एकोनाइट, इपिकाक, एण्टिम-टार्ट, आर्सेनिक, आर्स-आयोड, जेल्सी-

मियम, कैम्फोरा, एलियम सिपा, ब्रायोनिया, रस-टाक्स, मक-सॉल तथा पल्सेटिला आदि ।

सूतिका-ज्वर—में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है—ऐसिड कार्बोल, सिकेल, पाइरोजेन, सल्फर, ओपियम, कैलि-म्यूर, एचिम्नेशिया ।

ठंड लगकर आने वाले ज्वर—में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है—एकोनाइट, डल्कामारा, नक्स-मस्केटा, बैलाडोना, मर्क सॉल, नेट्रम-सल्फ, ब्रायोनिया, नक्स-वोमिका ।

अन्य औषधियाँ—ज्वर के विभिन्न प्रकारों में लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है—मेलिलोटस, ऐसिड-म्यूर, बैप्टीशिया, रस-टाक्स, हायोसियामस, ओपियम, स्ट्रैमोनियम, हैलिबेरिस, लाइकोपोडियम, क्रियाजोट, इपिकाक, ऐसिड नाइ, सिकेलि, टैरिबिन्थिना, एकोनाइट, चेलिडोनियम, चिनिनम आर्स आदि ।

रक्ताल्पता

यदि हथेली की रेखाएँ चौड़ी, मलिन तथा पीले रंग की हों तो जातक को 'रक्ताल्पता' (खून की कमी) की बीमारी होती है ।

होम्यो-चिकित्सा—रक्ताल्पता-रोग में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ऐसिड एसेटिक—दस्त, खाँसी, रात को पसीना आदि रोगों के कारण तथा प्रसूति की रक्तहीनता में हितकर है ।

साइक्लामेन—शरीर में हवा लगने से भय, अनियनित-ऋतु, सिर चकराना, भोजन हजम न होना, धुंधली दृष्टि तथा शरीर में रक्त की कमी ।

ग्रैफाइटिस—स्त्री देखने में मोटी, थुलथुल शरीर वाली, बलिष्ठ-सी प्रतीत हो, परन्तु यथार्थ में बल-हीन, रक्त-हीन, मलिन-मुख, चेहरा फीका अथवा पीली आभायुक्त एवं पलकें फूली-फूली सी हों तो इसका प्रयोग हितकर रहता है ।

अस्ट्रिया वर्जिनिया—मलेरिया के कारण उत्पन्न रक्तहीनता में ।

नैट्रम-म्यूर – ऋतु की गड़बड़ी, अत्यधिक शुक्र-क्षय, शरीर के किसी तेजपूर्ण पदार्थ के क्षय होने से उत्पन्न रक्तहीनता-दुर्बलता, फीका चमड़ा, सूखा चेहरा, थोड़े परिश्रम से ही छाती धड़क उठे एवं थकावट आ जाय—इन लक्षणों में हितकर है।

लेसिथिन—अधिक समय तक कोई रोग भोगने के बाद की रक्तहीनता में हितकर है।

फेरम-मेट—चेहरे का रंग फीका अथवा पीलापन लिए हुए। थोड़ी-सी उत्तेजना से ही, चेहरे का लाल हो जाना, बाहर से देखने में मोटा-ताजा, परन्तु यथार्थ में रक्तहीन।

कैलि-कार्ब - फीकी त्वचा, दुर्बल शरीर, मुँह-आँख फूले हुए तथा शरीर में रक्त-शून्यता के लक्षणों में हितकर है।

मैगेनम—स्त्रियों में ऋतु का शीघ्र होना तथा उसका दो दिनों से अधिक न रहना। फेरम के बदले भी इसका प्रयोग किया जाता है।

रक्त-विकार

यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तथा नखों के ऊपर लाल रंग के छोटे-छोटे अर्द्धचन्द्र-चिह्न हो तो जातक को रक्त-विकार से सम्बन्धित कोई रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—रक्त-विकार से सम्बन्धित रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

हिपर-सल्फ 6, 30, 200—सड़ने वाले जख्म; जिनके चारों ओर छोटी-छोटी फुंसियाँ बन जाती हैं। फोड़े आदि की पकने की प्रवृत्ति।

एचिन्नेशिया Q—फोड़े-फुंसी, गन्दे, ठीक न होने वाले जख्म, मुँह तथा नाक एवं अन्य अङ्गों से बेहद दुर्गन्ध आना। प्रसूत-ज्वर में स्त्रियों के शरीर का खून बिगड़ जाने में हितकर है। कार्बंकल, गैंग्रीन तथा बारम्बार फोड़ा होने की प्रवृत्ति।

बैप्टीशिया 12—रक्त-विकार के कारण होने वाला टाइफाइड-ज्वर, श्वास तक में दुर्गन्ध, फोड़ों में सड़ांध की बू, दुर्गन्ध के कारण रोगी का तन्द्रा में रहना।

ऐन्थ्रैसीनम 2' 0, 1M—मुँहासे, विषैले फोड़े, सड़ने वाले फोड़े तथा जख्म, अँगुल हाड़ा, कान की जड़ के जख्म, असह्य जलन तथा दुर्गन्धित स्राव में हितकर है।

पाइरोजेन 200—सड़ांध, विषाक्त-गैस से उत्पन्न कोई रोग तथा प्रसूत-ज्वर में हितकर है।

गन-पाउडर 3x—दूषित-भोजन के कारण होने वाले रक्त-विकार में अत्यधिक उपयोगी है। इसका प्रयोग करने से दो दिन पूर्व यदि 'हिपर सल्फर 200' की एक मात्रा लेली जाय तो रक्त-दोष दूर करने में इससे बहुत सहायता मिलती है। सामान्यतः हर प्रकार के रक्त-विकार में यह हितकर है।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है—अर्सेनिक, सिकेल कौर, कार्बोवेज, लैकेसिस, बैलाडोना, ऐन्थ्रैक्सीनस, ऐकोनाइट, अर्निका, चायना, रस-टाक्स, ब्रायोनिया, मर्क-सौल आदि।

रीढ़ के रोग

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे, हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को रीढ़ से सम्बन्धित कोई बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा—रीढ़ से सम्बन्धित बीमारियों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

सिमिसिफ्यूगा 3—जरायु-सम्बन्धी शिकायतों के परिणाम स्वरूप होने वाले मेरुदण्ड-प्रदाह में हितकर है।

नेट्रम-म्यूर 30—कशेरुकाओं के बीच दुखन, छूने तथा दबाने से दर्द का अनुभव किसी कड़ी वस्तु पर लेटने से आरम्भ एवं मेरुदण्ड की शिथिलता के कारण होने वाला पक्षाघात।

फाइजोस्टिग्मा 3—मेरुदण्ड से टीस प्रारम्भ होकर सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है। प्रत्येक स्नायु में उत्तेजना, हाथ-पाँवों का सो जाना, अकड़न के साथ दर्द तथा कशेरुकाओं के बीच दबाने से दर्द होना।

ऐगैरिकस 3, 30, 200—मेरुदण्ड में टीस तथा जलन का अनुभव, शरीर के विभिन्न अंगों में फड़कन, त्वचा में बर्फ की सुइयाँ चुभने जैसा अनुभव

मेरुदण्ड को छूने से दर्द, कमर में दर्द तथा खुली हवा में घूमने से दर्द।

जिकम मेट 6—कमर के अन्तिम कशेरुका में दर्द बैठा नहीं जाता, परन्तु चलते समय उतना कष्ट नहीं होता। मेरुदण्ड में जलन, एवं अंगों का काँपना।

कौल्युलस 3, 30—मेरुदण्ड में कोमलता पाये जाने के साथ कमर में कमजोरी और दर्द, बार-बार सिर चकराना तथा पेट में खालीपन का अनुभव।

नक्स-वोमिका 30—कामधिक्य (सैक्स-सेवन) के कारण मेरुदण्ड का प्रदाह, हाथ-पाँव तथा मेरुदण्ड में सुनापन तथा उनमें कोड़ियाँ रेंगने जैसा अनुभव।

टेल्यूरियम 6, 30—गलेकी अन्तिम हड्डी से लेकर मेरुदण्ड की पाँचवीं कशेरुका तक के हिस्से में दर्द।

बैसीलीनम 200—तपेदिक के अंश के साथ मेरुदण्ड का प्रदाह होने पर सप्ताह में एक बार इसकी एक मात्रा देते रहें।

थूजा 6—अधिक बार टीका लगवाने के कारण उत्पन्न मेरुदण्ड के प्रदाह में हितकर है।

मस्तिष्क-ज्वर

यदि मस्तक-रेखा टूटी हो अथवा द्वीप-चिह्न युक्त हो तो जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी ज्वर की शिकायत बनी रहती है।

होम्यो-चिकित्सा—मस्तिष्क-ज्वर में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

जिकम मेट—मस्तिष्कावरण-झिल्ली का प्रदाह, सम्पूर्ण अज्ञान, टेढ़ी दृष्टि अकड़न तथा अचानक ही पाखाना बन्द होकर मस्तिष्क के लक्षणों में।

ग्लोनयिन—मेनिञ्जाइटिस, सिर में टपकमय दर्द, वमन, रोग के आरम्भ से ही फिट आना, सिर का गरम तथा हाथ-पावों का ठंडा रहना आदि लक्षणों में।

जिंकस सल्फ—यह मेनिञ्जाइटिस अर्थात् मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह की श्रेष्ठ औषध है।

मेडोरिनम—सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिञ्जाइटिस में इसका प्रयोग करें। पहले सिमसिफ्यूगा, उसके बाद मेडोरिनम देना चाहिए। अरोग्य के लक्षण प्रकट होने पर लाइकोपोडियम।

सल्फर—मुंह का रंग लाल, नींद आती है परन्तु सो नहीं सकता।

आर्निका—चोट लगने से रोग की उत्पत्ति होने पर।

सिम्पल मेनिञ्जाइटिस—इनमें लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग किया जाता है—अर्निका, ऐपिस, बेलाडोना, सिक्युटा, जेल्सिमियम, ग्लोनयिन, कैलि ब्रौम, विरेट्रम-विर जिंकम।

ट्युबर्क्युलर मेनिञ्जाइटिस—एपिस मेल, सिक्युटा, कैल्क आयोड, लाइकोपोडियम, अर्जेण्ट नाई लक्षणानुसार दें।

सेरिब्रो स्पाइनल—ग्लोनयिन, हेलिबोरस, सिक्युटा, हायोसियामस, जिंकम, जेल्सिमियम, एगारिकस, सिमिसिफ्लूगा, फाइजस, कैलबिस इण्डिका, सल्फर तथा जिंकम-इन्हें लक्षणानुसार दें।

विशेष—मस्तिष्क झिल्ली प्रदाह के रोगी की गर्दन तथा सिर पर 'आइस-बैग' रखा जाता है, परन्तु इसकी अपेक्षा लाभ होने तक सिर पर निरन्तर ठण्डा पानी डालने अथवा ठण्डे पानी का 'डूस' देने से विशेष लाभ होता है।

लाल-ज्वर

यदि जीवन-रेखा पर 'क्रास' अथवा 'वृत्त' चिह्न हो तो जातक को 'लाल-ज्वर' की बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा—'लाल ज्वर' को हिन्दी में 'आरक्त-ज्वर' तथा अँग्रेजी में (Scarlation) कहते हैं। यह खसरे की भाँति ही एक प्रकार का तरुण तथा फैलने वाला रोग है। खुजली तथा गले में जख्म इस रोग के विशेष लक्षण हैं। यह बीमारी छोटे बच्चों (शिशुओं) को अधिक होती है। इसमें शरीर का तापमान 105 डिग्री तक बढ़ जाता है तथा नाड़ी की गति 100 से 160 तक हो जाती है। प्यास, सिर में दर्द, वमन, गले में जख्म आदि इस रोग के पूर्व लक्षण हैं। फिर 24 घण्टों के भीतर शरीर पर चमकीले लाल रंग के खुखली

भरे दाने निकल आते हैं। ये दाने पहले कंधे और छाती पर निकलते हैं, फिर शीघ्रता से सम्पूर्ण शरीर पर फैल जाते हैं। तेज सिर दर्द, प्रलाप, जीभ पर मैल चढ़ जाना, जीभ के अगल-बगल तथा आगे का भाग लाल होना एवं जीभ पर लाल रंग के काँटे से उभर आना—इस रोग के उपसर्ग हैं। यह रोग प्राय दो सप्ताह से अधिक नहीं ठहरता। इस ज्वर में पहले दिन से ही सम्पूर्ण शरीर लाल हो जाता है। यह रोग (1) सलल, (2) गले में जख्म वाला तथा (3) सांघातिक तीन प्रकार का होता है। इसमें लक्षणानुसार निम्न लिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए—

बैलाडोना 30—ज्वर गले में घाव, लाल रंग के दाने तथा प्रलाप के लक्षणों में दें।

मर्क-कोर 3—गले में जख्म, गाँठें सूजी हों, मुंह से बहुत लार गिरे, श्वास में बदबू तथा सुस्ती के लक्षणों में। यदि गुर्दा भी आक्रान्त हो तो इससे विशेष लाभ होता है।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार—फाइटोलैक्का, एपिस, ऐकोनाइट, अर्सेनिक, सल्फर, एइलैन्थस, क्युप्रम ऐसेट, एसिडम्यूर, क्रोटेलस, एचिन्नेशिया तथा हिपर सल्फर आदि औषधियों के प्रयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है। सांघातिक ज्वर के लिए—एइलेन्थस 1x, क्युप्रम ऐसेटिकम 3x अर्सेनिक 3x तथा एसिड म्यूर 6 का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।

दन्त-रोग

यदि शनि क्षेत्र उन्नत हो और उस पर अधिक रेखाऐं हो स्वास्थ्य-रेखा तथा भाग्य-रेखा लहरदार एवं लम्बी हों तथा अँगुलियों के द्वितीय पूर्व लम्बे हों तो जातक को दाँत एवं मसूढ़े सम्बन्धी रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—दाँत एवं मसूढ़े सम्बन्धी रोगों में निम्नलिखित होम्यो औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एन्टिम क्रूड—खोखला दाँत, कुछ खाने अथवा ठण्डा पानी दाँत में लगने से असह्य वेदना।

एकोनाइट—ठण्ड लगकर दाँत की जड़ फूलना, दर्द और यंत्रणा।

चेनापॉडो—दाँत के दर्द में हितकर है।

कैल फ्लोर—दाँतों का हिलना, दाँत में कुछ लगते ही दर्द होना।

कैल फॉस—शिशुओं के दाँत देर से निकलना। वयस्कों के दाँत में छेद, दाँत की जड़ ढीली हो जाना तथा दाँत का नष्ट होना।

प्लेण्टैगो—प्रायः हर प्रकार के दन्त-शूल में हितकर है। वाह्य प्रयोग के लिए मदर टिचर का प्रयोग करें।

कार्बो—छिद्रमय मसूढ़े, दाँतों की जड़ निकल आना, रक्त वहना।

चायना—थोड़े स्पर्श से दर्द, परन्तु दाँत पर दाँत रखकर जोर से दबाने पर दर्द घटना।

कॉफिया—मुँह में ठंडा पानी रखने पर दाँत का दर्द घटता हो तो।

हेक्ला लावा—मसूढ़ों में घाव, फोड़े, नासूर, कीड़े लगकर दाँतों में घाव, पायरिया, सूजन के साथ दर्द तथा उखड़वाने के बाद कुछ अंश रह जाने के कारण होने वाली यन्त्रणा में हितकर।

क्रियोजोट—कीड़े लगे दाँतों में इसके वाह्य प्रयोग से लाभ होता है। दूध के दाँत में क्रीड़ा लगना। दाँत का पहले पीला, फिर काला होना, तथा क्रमशः क्षय होकर भीतर गड्ढा हो जाना।

कॉफिया टोस्ट—ध्वंस हुए दाँत में दर्द के कारण मुख के स्नायुशूल-दर्द में दें।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है—साइलिसिया, चायना, सिस्टस, फास्फोरस, एपोसाइनस, ऐसिड फ्लोर, मर्कसॉल, मैग्नेशिया कार्ब, रैटान्हिया, स्टैफिसेग्रिग्रा आदि।

नेत्र-पीड़ा

यदि अनामिका अँगुली के तीसरे पर्व पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर नीले रंग का 'दाग-चिह्न' हो तो जातक की आँखों में पीड़ा बनी रहती है।

होम्यो-चिकित्सा—नेत्र-पीड़ा में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एकोनाइट—ठंड या ठंडी हवा से आँखें आना, आँखों में अचानक प्रदाह फूल जाना, लाल रंग की, आँखों के भीतर जलन तथा करकराहट।

आर्टिमिसिआ—आँखों में चोट लगना तथा उसके कारण उत्पन्न सभी उपसर्ग।

मर्क सॉल—पलकों का प्रदाह, कुटकुटाहट, रात में आँखों का चिपक जाना, आँखें आना, आँखों में पीव, कीचड़ अथवा घाव।

पल्सेटिला—'मर्क-सॉल' जैसे लक्षणों में पर्याय-क्रम से दें।

सिमसिफ्यूगा—आँखों के तारों तथा भौंहों के समीप अत्यधिक दर्द, उसके साथ ही सिर-दर्द बाँई आँख में दर्द की अधिकता।

एब्सिन्थियम—ठण्ड लगकर आँख का प्रदाह।

एट्रोसिया—आँख आने के बाद अनेक प्रकार के रोम, भ्रमपूर्ण दृष्टि, द्वि-दर्शन, सब वस्तुओं का बड़ा दिखाई देना।

लाइकोपोडियम—किसी वस्तु का दाँया आधा भाग दिखाई देना,।

लिथिया—किसी वस्तु का बाँया आधा भाग दिखाई देना।

ऑरम—किसी वस्तु का निचला आधा भाग दिखाई देना।

मार्फिनम—चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई पड़ना।

कैनाबिस सैट—आँखों से कुहासे जैसा दिखाई देना।

सिनेरेरिया मेरिटिमा—मोतिया बिन्द, कार्निया में दाग तथा धुंधला दिखाई देना।

ग्रैफाइटिस – कीचड़ से आँखें सटजाना। फलकें फटकर रक्तस्राव।

कास्टिकम—मोतियाबिन्द की प्रथमावस्था में धुंधला, बादल जैसा दिखाई देना।

अन्य औषधियाँ सिनाबेर, क्लिमेटिस, कोनियम, क्रोकस, कैलेण्डुला, कैन्थरिस, एलियम सिपा, हिपर, स्टैफिसेग्रिया, मेजेरियम, सल्फर, कैलि-कार्ब, कैलिबाई आदि लक्षणानुसार प्रयोग करें।

दृष्टि-दौर्बल्य

यदि हृदय-रेखा पर 'बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक को दृष्टि-दौर्बल्य रोग होता है अर्थात् उसकी दृष्टि कमजोर होती है।

होम्यो-चिकित्सा—दृष्टि-दौर्बल्य तथा आँखों के अन्य रोगों में निम्न-लिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ब्रांथप्स—दिवान्धता, सूर्योदय के बाद कुछ भी न देख पाना।

एल्युमिना—अस्पष्ट दृष्टि, द्रव्यादि पीले दिखाई दें।

एमोन-कॉर्ब—सूक्ष्म कार्य की वजह से दृष्टिहीनता।

ऑरम—एक वस्तु का दो अथवा आधी दिखाई देना।

कामोवलेडिया—दाँई आँख के भीतर दर्द, अँधेरा दिखाई देना।

कोनियम—प्रदाह अधिक न होने पर भी रोशनी न सुहाना।

क्रोकस—पलकों का फड़कना, दृष्टिहीनता, कुहासे के भीतर होने जैसा अनुभव।

लैकेसिस—किसी भी प्रकार देख न पाना अथवा धुँआ जैसा सामान्य दिखाई देना। अच्छी भली दृष्टि-शक्ति का अचानक गायब-सा हो जाना। हृत्पिण्ड अथवा सिर-दर्द के कारण दृष्टि-शक्ति का ह्रास।

फास्फोरस—दृष्टि-शक्ति का ह्रास, अनेक प्रकार के रंग देखना बत्ती की रोशनी दूनी, चौगुनी, अठगुनी दिखाई देना।

फाइजस्टिग्मा—दूर की वस्तुएँ न दीखना, अनेक प्रकार के रंग दीखना।

सिपिया—अचानक ही दृष्टि-शक्ति का लोप हो जाना। धुंधली दृष्टि, दृष्टि-शक्ति की स्वल्पता।

लिथियम कार्ब—किसी वस्तु का आधा हिस्सा ही दिखाई देना।

पैराफिना—अँधेरा दिखाई देना।

कार्बोनियम सल्फ—अदूर-दृष्टि, वस्तु का मानो कुहासे के भीतर से देखना, दृष्टि का सम्पूर्ण लोप।

अन्य औषधियाँ—कॉलेस्टेरिनम, कोकेन, आदि।

अन्धापन

(1) यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है।

(2) यदि तर्जनी के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अन्धा एवं दुर्गुणी होता है।

(3) यदि शुक्र-क्षेत्र पर लाल रंग का चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है।

(4) यदि मध्यमा अँगुली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण जैसा चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है।

(5) यदि शुक्र-क्षेत्र से हृदय-रेखा तक एक बड़ा द्वीप-चिह्न हो तो जातक अन्धा होता है।

(6) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर आरी जैसे दाँत बने हों अथवा वृत्त-चिह्न हो तो जातक आँखों से अधिक काम लेने के कारण अन्धा हो जाता है।

होम्यो-चिकित्सा—निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग दृष्टि-क्षीणता में हितकर सिद्ध होता है—

चायना 6, 30—शरीर में रक्त की कमी होने के कारण यदि कम दिखाई दे।

फास्फोरस 6, 30—'चायना' से लाभ होने पर इसे दें।

नक्स वोमिका 1x—अत्यधिक नशा-सेवन से दृष्टि कमजोर होने पर।

बेलाडोना—6, 30—अधिक खून एकत्र होने के कारण दृष्टि-क्षीणता में।

पल्सेटिला 6, 30—मानसिक रजःस्राव रुककर दृष्टि-क्षीणता।

कैक्टस 6—हृत्पिण्ड के रोग के कारण दृष्टि-क्षीणता में।

सँगुइनेरिया—तीव्र सिर-दर्द के साथ दृष्टि-क्षीणता में।

रक्त की कमी के कारण दृष्टि-क्षीणता में— फेरम 6, एसिड-फास 6, आर्सेनिक 30, चायना 6 अथवा युफ्रेशिया 2x।

पाचन शक्ति की कमी के कारण दृष्टि-क्षीणता में—नक्स-वोमिका 30, पल्सेटिला 30, मर्क्यूरियस 6, चायना 6, सल्फर 30 अथवा बेलाडोना 3।

रतौंधी में—फास्फोरिक एसिड 3, 30, हेलिबोरस नाइग्रा 3, 200, चायना 6, बैलाडोना 6, लाइकोपोडियम 30, हाइपोस 6, रैनेन 30, नाइट्रिक-एसिड 30 आदि।

दिनौंधी—वोथ्रप्स 6, 30, सिलिका 30, फास्फोरस 6, सल्फ्युरिक एसिड 6, बैलाडोना 6 आदि।

बहरापन

यदि मस्तक-रेखा पर आरी जैसे दाँत हों तो जातक को बहरापन होता है अथवा उसे कानों से कम सुनाई देता है।

होम्यो-चिकित्सा—बहरापन तथा कान के अन्य रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

शारीरिक कमजोरी के कारण बहरापन हो तो—पल्सेटिला 3 (नये रोग में), कैलिहाइड्रो 3x वि० अथवा मर्क-वाई 6x वि० (पुराने रोग में) डल्कामारा 6 (बरसात की तर हवा लगने के कारण), ऐकोनाइट 2x (ठण्डी सूखी हवा लगने के कारण) एवं ब्रायोनिया (वात के साथ बहरापन)।

ज्वर आदि के बाद बहरापन हो तो—बैलाडोना 3 (बहरेपन के साथ सिर में चक्कर आना), चायना 3x अथवा एसिड फास (शरीर के रस-रक्त आदि का स्राव होने के बाद का बहरापन), पल्सेटिला 6, सल्फर 30।

त्वचा की कोई बीमार दबजाने अथवा कान का पीव बन्द हो जाने के कारण बहरापन हो तो—हिपर सल्फर 6, सल्फर 30, आरम 3x-200।

तालुमूल-प्रदाह अथवा उपजिह्वा फूलने के कारण उत्पन्न बहरापन—मर्क-बिन आयोड 6x, मर्क-कोर 6, कैलि-हाइड्रो 3x वि०, बैराइटा-कार्ब 6।

मस्तिष्क में गहरी चोट के कारण बहरापन—आर्निका 3x।

बहरेपन के साथ कान में धीमी आवाज होने पर—नेट्रम-सैलिसिलिकम 3, नक्स-वोम 3 अथवा इग्नेशिया 6 (बहरेपन के साथ सुनने में तेजी) बैप्टीशिया 2x (बहरेपन के साथ कान में गहरी गरज)।

विशेष—बहरेपन की प्रथमावस्था में 'मूलेन आयल' की 3-4 बूंदें दिन में दो बार कान में डालते रहने से बहुत लाभ होता है।

अन्य औषधियाँ—इस रोग में लक्षणानुसार इन औषधियों के उपयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है—फास्फोरस 30, चिनिनम-सल्फ 3 वि०, एसिड फास 6, इलैप्स 3, कैल्केफास 3x, ग्रैफाइटिस 6, 200, मर्क्युरियस 6, बैलाडोना 3, पल्सेटिला 6, सिलिका 30, चायना 6, सल्फर 30, एसिड फास 3, हिपर सल्फर 6, आरसमेट 3, कास्टिकम 6, एण्टिम क्रूड 6, नाइट्रिक एसिड, आयोड, आरम, मर्क-आयोड, कैलि-आयोड आदि।

पाँवों के रोग

यदि शनि-क्षेत्र उन्नत हो, मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तथा हथेली पर रेखाओं की अधिकता हो तो जातक को पाँवों से सम्बन्धित कोई रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—निम्नलिखित-होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग पाँवों के रोगों में हितकर सिद्ध होता है—

नेट्रम कार्ब—पाँव की गाँठ तथा सन्धि-स्थल की दुर्बलता, तलवा फूला

हुआ एवं दर्द, थोड़ी दूर चलते ही पाँव की गाँठ में दर्द होने लगना।

ऐण्टिम क्रूड—पाँव के तलवे में केवल दर्द होना, फूला न रहना।

मैगेनम-म्यूर—पाँव की गाँठों तथा हड्डियों में दर्द।

मैगेनम एसेट—एढ़ी व गाँठ में दर्द। तलवे में वात।

मैगेनम आक्साइडेट—पाँव की हड्डी टीबिया में दर्द।

फाइटोलक्का—एड़ी में कटने जैसा दर्द।

साइक्लामेन—एड़ी में जलन एवं घाव जैसा दर्द।

लीडम—एड़ी में सूजन तथा तलवे में बहुत दर्द।

एण्टिम क्रूड—तलवे में दर्द।

हाइड्रैस्टिस—पाँव की अँगुलियों में घट्टे होना।

एनाकार्ड आक्सि—पाँव का घट्टा, घाव, फटा हुआ तलवा।

फील पांव रोग—यह रोग बहुत कम ही ठीक हो पाता है। इसमें हाइड्रोकोटाइल, एनाकार्ड तथा कैलोटापिस नामक औषधियों का बहुत दिनों तक लक्षणानुसार प्रयोग करना पड़ता है।

अधिक चलने में पाँव दुखना—आर्निका।

पाँवों ठंडे होते जा रहे हों—कार्बोवेज 30 या सिस्टस 30।

पाँवों में दर्द रसटॉक्स, एपिस 3x, लीडम 6, कालोफाइलम 1।

पिंडलियों में दर्द—क्युप्रस आर्स 3x

पाँव के तलवों में कष्ट—म्युरियेटिक ऐसिड, ऐसिड फास, पल्सेटिला, पेट्रोलियम, ग्रेफाइटिस, सल्फर, साइलीशिया, सिकेल आदि लक्षणानुसार दें।

एड़ी में कष्ट—साइलीशिया कॉल्चिकम, वर्बेरिस।

त्वचा-रग

(1) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा मस्तक-रेखा घूम कर उससे मिल गई हो तो जातक को फोड़ा-फुंसी आदि त्वचा सम्बन्धी रोग होते हैं।

(2) यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तथा नख बाँसुरी जैसे हों तो जातक को त्वचा सम्बन्धी रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—त्वचा सम्बन्धी रोगों में निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ग्रेफाइटिस 30—अनेक प्रकार के त्वचा रोगों में हितकर। तारदार चिपटने वाला स्राव, गोंद एवं शहद सरीखा ऐग्जीमा—जो फटा-फटा हो।

आर्सेनिक 30, 200— जिन रोगों में त्वजा मोटी पड़ जाती है, उनमें हितकर है। पुराने पित्तीरोग में भी लाभ करती है।

सल्फर—खुजली, सिर पर खुश्की, गर्मी रात में बढ़ने वाली तेज खुजली एवं लाल त्पचा वाला एग्जीमा।

एन्टिम क्रूड—त्वचा पर मोटे दाने, बच्चों के सिर पर शहद के रंग

के खुरंड पड़ना।

थूजा—मस्से, टीका लगवाने के बाद होने वाला एग्जीमा।

नेट्रम-म्यूर—नाखून के किनारे वाले भाग की सूजन, तर एग्जीमा।

क्रियोजोट—जोड़ों के पास वाली पेशियों पर दाने पड़ना।

बरबेरिस—चेहरे की फुँसी (मुँहासे) आदि तथा सोरिएसिस।

हाइड्रोक्रोटाइल—त्वचा पर अत्यधिक खुश्की, उससे छिछड़े उतरते रहना। कुष्ठ रोग तथा सोरिएसिस।

पेट्रोलियम—शुद्ध एग्जीमा जिस पर मोटा खुरंड पड़ता हो,पस रिसता हो अथवा त्वचा में फटाव हो। कानों के पीछे के एग्जीमा में विशेष हितकर हैं।

मेजेरियम—सिर पर पपड़ियां जमना एवं जबर्दस्त खुजली, फफूंदी लगने से खोपड़ी पर अथवा कानों के पीछे खुजली होना, जो रात में इ.नी बढ़ जाती हो कि नींद न आये।

रस-टाक्स—हर्पीज, एग्जीमा, खुजली आदि में हितकर है।

सोरिनम—असह्य खुजली, त्वचा पर जगह-जगह दाने पड़ना।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है—ओलिएण्डर, रैननक्युलस, नाइट्रिक एसिड, पल्सेटिला, डल्कामारा, सीपिया, टेल्यूरियम, हिपर सल्फर, फ्लोरिक एसिड एवं कैलिम्यूर आदि।

आत्महत्या की प्रवृत्ति

(1) यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर निकली हो तथा हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा से मिल रही हो तो जातक अपने किसी प्रेम सम्बन्ध के पीछे दीवाना होकर आत्महत्या जैसा दुष्कर्म करने में प्रवृत्त होता है।

(2) यदि मस्तक-रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिल गई हो, गुरु-क्षेत्र उन्नत हो। जीवन-रेखा को छोटी-छोटी रेखाऐं काट रही हों तथा भाग्य-रेखा कमजोर हो, तो भी जातक की आत्म-हत्या की ओर प्रवृत्ति होती है।

होम्यो-चिकित्सा—आत्म-हत्या की प्रवृत्ति होने पर निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभकर सिद्ध होता है है—

आरम मेट 30—जीवन से निराश होकर आत्मघात के लिए उद्यत होना।

आर्सेनिक ऐल्बम 30—जीवन से निराश होकर आत्म-घात की इच्छा करना।

टिप्पणी—'उद्यत' होने तथा 'इच्छा' में मुख्य भेद यह है कि 'उद्यत' होने पर मरने का भय दूर हो जाता है, जबकि 'इच्छा' होने पर मरने का भय भी बना रहता है।

❀ समाप्त ❀

हाथ की रेखाऐं व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण होती हैं। इनके द्वारा व्यक्ति के बुद्धि-कौशल, ज्ञान-प्राप्ति, प्रवृत्ति, व्यवसाय, आयु, स्वास्थ्य आदि का पता आसानी से लगाया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में हाथ की रेखाओं के आकार, प्रकार और उन पर स्थित चिह्नों के द्वारा होने वाले रोगों का उल्लेख करके उसका निदान भी प्रस्तुत किया गया है।

अपने ढंग की अद्भुत पुस्तक !

'हस्तरेखाऐं रोग और चिकित्सा'

प्रकाशक—रोजगार प्रकाशन हालनगंज, मथुरा।